Dr. Rajiv Kumar,
Department of History,
H.D.Jain College, Ara.

Q. - समाजवाद और पूंजीवाद दो महाशक्तियों के बीच शीत युद्ध का प्रमुख कारण था ? स्पष्ट करें।

प्रस्तावना:

द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945) की समाप्ति के बाद विश्व राजनीति में एक नया युग प्रारम्भ हुआ, जिसे शीत युद्ध (Cold War) के नाम से जाना जाता है। यह युद्ध प्रत्यक्ष सैन्य संघर्ष नहीं था, बल्कि दो महाशक्तियों—संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) और सोवियत संघ (USSR)—के बीच वैचारिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक प्रतिस्पर्धा का दौर था।
शीत युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण और मूल कारण था—समाजवाद (Socialism/Communism) और पूंजीवाद (Capitalism) के बीच वैचारिक टकराव। यह केवल दो देशों का संघर्ष नहीं था, बल्कि दो भिन्न जीवन-दृष्टियों, दो आर्थिक व्यवस्थाओं और दो राजनीतिक विचारधाराओं का संघर्ष था।

1. समाजवाद और पूंजीवाद: वैचारिक पृष्ठभूमि

(क) पूंजीवाद की अवधारणा

पूंजीवाद एक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था है जिसमें:
निजी संपत्ति का अधिकार होता है।
उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है।
मुक्त बाजार (Free Market) की व्यवस्था होती है।
लाभ कमाना मुख्य उद्देश्य होता है।
लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को महत्व दिया जाता है।
संयुक्त राज्य अमेरिका पूंजीवादी व्यवस्था का प्रमुख प्रतिनिधि था।

(ख) समाजवाद/साम्यवाद की अवधारणा

समाजवाद (विशेषकर सोवियत शैली का साम्यवाद) में:
उत्पादन के साधनों पर राज्य का स्वामित्व होता है।
निजी संपत्ति का सीमित या निषेधात्मक स्थान होता है।
वर्गहीन समाज की स्थापना का लक्ष्य होता है।
एकदलीय शासन प्रणाली होती है।
सोवियत संघ समाजवादी विचारधारा का प्रमुख केंद्र था।

2. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद परिस्थितियाँ:

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद:
यूरोप के अधिकांश देश कमजोर हो चुके थे।
ब्रिटेन और फ्रांस जैसी शक्तियाँ आर्थिक रूप से कमजोर हो गईं।
केवल अमेरिका और सोवियत संघ शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरे।
अब विश्व दो गुटों में बँट गया:
पश्चिमी गुट (अमेरिका के नेतृत्व में) – पूंजीवादी
पूर्वी गुट (सोवियत संघ के नेतृत्व में) – समाजवादी
यह विभाजन केवल राजनीतिक नहीं बल्कि वैचारिक था।

3. वैचारिक असहिष्णुता और अविश्वास:

(क) अमेरिका का दृष्टिकोण
अमेरिका को भय था कि:
साम्यवाद लोकतंत्र को समाप्त कर देगा।
सोवियत संघ विश्व में साम्यवाद फैलाना चाहता है।
पूंजीवादी व्यवस्था को खतरा है।
अमेरिका ने "ट्रूमैन सिद्धांत (1947)" के माध्यम से साम्यवाद के विस्तार को रोकने की नीति अपनाई।

(ख) सोवियत संघ का दृष्टिकोण
सोवियत संघ को लगता था कि:
पूंजीवाद शोषण पर आधारित है।
अमेरिका साम्यवाद को नष्ट करना चाहता है।
पश्चिमी देश सोवियत संघ को घेरने की नीति अपना रहे हैं।
इस प्रकार दोनों पक्ष एक-दूसरे को शत्रु मानने लगे।

4. यूरोप का विभाजन और "आयरन कर्टन":

ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने 1946 में कहा कि यूरोप पर एक "आयरन कर्टन" (लोहे का परदा) गिर चुका है।
पूर्वी यूरोप के देश (पोलैंड, हंगरी, रोमानिया आदि) सोवियत प्रभाव में आ गए।
पश्चिमी यूरोप के देश अमेरिका के साथ रहे।
यह विभाजन समाजवाद और पूंजीवाद के टकराव का प्रत्यक्ष परिणाम था।

5. आर्थिक प्रतिस्पर्धा:

(क) मार्शल योजना (1947)

अमेरिका ने यूरोप के पुनर्निर्माण के लिए आर्थिक सहायता दी।

उद्देश्य: यूरोप में साम्यवाद को रोकना।

इससे पश्चिमी यूरोप में पूंजीवादी व्यवस्था मजबूत हुई।

(ख) कोमेकॉन (COMECON)

इसके जवाब में सोवियत संघ ने 1949 में पूर्वी यूरोपीय देशों के लिए आर्थिक संगठन बनाया।

यह आर्थिक प्रतिस्पर्धा भी वैचारिक संघर्ष का हिस्सा थी।

6. सैन्य गुटों का निर्माण:

(क) NATO (1949)

अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी देशों का सैन्य संगठन।

(ख) वारसा संधि (1955)

सोवियत संघ के नेतृत्व में समाजवादी देशों का सैन्य गठबंधन।

दोनों गुट एक-दूसरे के विरुद्ध तैयार थे। यह सैन्य प्रतिस्पर्धा भी वैचारिक टकराव का परिणाम थी।

7. हथियारों की दौड़ और परमाणु प्रतिस्पर्धा:

1945 में अमेरिका ने परमाणु बम बनाया।

1949 में सोवियत संघ ने भी परमाणु बम बना लिया।

इसके बाद हाइड्रोजन बम और मिसाइलों की होड़ शुरू हुई।

यह केवल सैन्य शक्ति का प्रदर्शन नहीं था, बल्कि यह साबित करने की कोशिश थी कि किस विचारधारा की शक्ति अधिक है।

8. प्रतिनिधि युद्ध (Proxy Wars):

समाजवाद और पूंजीवाद का टकराव कई देशों में युद्ध के रूप में सामने आया:

कोरिया युद्ध (1950-53) – उत्तर कोरिया (समाजवादी) बनाम दक्षिण कोरिया (पूंजीवादी)।

वियतनाम युद्ध – साम्यवाद बनाम पूंजीवाद।

अफगानिस्तान युद्ध (1979) – सोवियत हस्तक्षेप और अमेरिकी समर्थन।

इन युद्धों में दोनों महाशक्तियाँ सीधे नहीं भिड़ीं, लेकिन अपने-अपने गुटों का समर्थन करती रहीं।

9. जर्मनी और बर्लिन संकट:

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मनी दो भागों में बंट गया:

पश्चिमी जर्मनी (पूंजीवादी)
पूर्वी जर्मनी (समाजवादी)
1961 में बर्लिन की दीवार का निर्माण इस वैचारिक संघर्ष का प्रतीक था।

10. प्रचार और सांस्कृतिक संघर्ष:

अमेरिका ने लोकतंत्र और उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया।
सोवियत संघ ने श्रमिक वर्ग और समानता की विचारधारा को प्रचारित किया।
फिल्म, साहित्य, खेल और अंतरिक्ष प्रतियोगिता (स्पेस रेस) भी इस संघर्ष का हिस्सा बन गए।

11. अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा:

1957 में सोवियत संघ ने "स्पुतनिक" उपग्रह छोड़ा।
1969 में अमेरिका ने चंद्रमा पर मानव भेजा।
यह भी दिखाने की कोशिश थी कि किस प्रणाली की वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता अधिक है।

12. विचारधारा का वैश्विक प्रभाव:

समाजवाद और पूंजीवाद के टकराव के कारण:
एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों में गुटबंदी हुई।
नवस्वतंत्र देशों पर दोनों गुटों का प्रभाव बढ़ा।
गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का जन्म हुआ।

13. शीत युद्ध का अंत :

1980 के दशक में:
सोवियत संघ आर्थिक रूप से कमजोर हो गया।
मिखाइल गोर्बाचेव ने "ग्लासनोस्त" और "पेरेस्त्रोइका" की नीति अपनाई।
1991 में सोवियत संघ का विघटन हो गया।
इसके साथ ही शीत युद्ध समाप्त हो गया और पूंजीवाद की विजय मानी गई।

निष्कर्ष :

स्पष्ट है कि शीत युद्ध का मूल कारण समाजवाद और पूंजीवाद का वैचारिक टकराव था।
यह संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं था, बल्कि:
आर्थिक व्यवस्था का संघर्ष
शासन प्रणाली का संघर्ष

जीवन मूल्यों और सामाजिक संरचना का संघर्ष

दोनों महाशक्तियाँ अपने-अपने विचारों को श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहती थीं। परिणामस्वरूप विश्व लगभग आधी सदी तक तनाव, भय और प्रतिस्पर्धा की स्थिति में रहा।

हालाँकि यह युद्ध प्रत्यक्ष नहीं था, लेकिन इसका प्रभाव अत्यंत व्यापक और गहरा था। अंततः सोवियत संघ के विघटन के साथ शीत युद्ध समाप्त हुआ, किंतु समाजवाद और पूंजीवाद की बहस आज भी विश्व राजनीति में किसी न किसी रूप में जारी है।
